

Light

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। हिन्दी और इसकी बोलियाँ उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में ६० करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिन्दी बोलती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की जो चन्द भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी। हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द सिन्धु से माना जाता है। 'सिन्धु' सिन्ध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द ईक) 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंग्रेजी शब्द 'इण्डिया' आदि इस 'हिन्दीक' के ही विकसित रूप हैं। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यज़्दी के 'जफरनामा' (१४२४) में मिलता है। प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन ने अपने " हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत " शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स्' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स्' को 'ह्' रूप में बोला जाता था।

Regular

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। हिन्दी और इसकी बोलियाँ उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में ६० करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिन्दी बोलती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की जो चन्द भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी। हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द सिन्धु से माना जाता है। 'सिन्धु' सिन्ध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द ईक) 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंग्रेजी शब्द 'इण्डिया' आदि इस 'हिन्दीक' के ही विकसित रूप हैं। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यज़्दी के 'जफरनामा' (१४२४) में मिलता है। प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन ने अपने " हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत " शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स्' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स्' को 'ह्' रूप में बोला जाता था।

Bold

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। हिन्दी और इसकी बोलियाँ उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में ६० करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिन्दी बोलती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की जो चन्द भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी। हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द सिन्धु से माना जाता है। 'सिन्धु' सिन्ध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द ईक) 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंग्रेजी शब्द 'इण्डिया' आदि इस 'हिन्दीक' के ही विकसित रूप हैं। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यज़्दी के 'जफरनामा' (१४२४) में मिलता है। प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन ने अपने " हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत " शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स्' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स्' को 'ह्' रूप में बोला जाता था।

Light

मौर्य साम्राज्य हे प्राचीन भारताच्या इतिहासातील एक प्रमुख साम्राज्य होते. त्यावर इ.स.पू. ३२१ ते इ.स.पू. १८५ पर्यंत मौर्य वंशाने राज्य केले होते. गंगेच्या खोऱ्यामधील मगध राज्यापासून उगम झालेल्या या साम्राज्याची राजधानी पाटलीपुत्र (आजचे पाटणा) ही होती. हे साम्राज्य इ.स.पू. ३२२ मध्ये चंद्रगुप्त मौर्य याने स्थापन केले. त्याने नंद घराण्याला पराभूत करून आपले साम्राज्य प्रस्थापित केले. त्याने भारतातील सत्तांच्या विघटनाचा फायदा उठवून आपल्या साम्राज्याचा पश्चिमेकडे व मध्य भारतात विस्तार केला. इ.स.पू. ३२० पर्यंत या साम्राज्याने अलेक्झांडरच्या प्रांतशासकांना (क्षत्रप) हरवून पूर्णपणे वायव्य भारत ताब्यात घेतला होता. ५०,००,००० वर्गकिमी एवढा प्रचंड प्रदेश ताब्यात असलेले मौर्य साम्राज्य हे तत्कालीन सर्वात मोठ्या साम्राज्यांपैकी एक, व भारतीय उपखंडातील सर्वात मोठे साम्राज्य होते. आपल्या सर्वोच्च शिखरावर असताना हे साम्राज्य उत्तरेला हिमालय, पूर्वेला आसाम, पश्चिमेला पाकिस्तान, अफगाणिस्तान व इराणचे काही भाग इतके पसरले होते. भारताच्या मध्य व दक्षिण प्रदेशांमध्ये चंद्रगुप्त व बिंदुसार यांनी कलिंग (सध्याचा ओरिसा) हा प्रदेश वगळता विस्तार केला. कलिंग नंतर सम्राट अशोकाने जिंकून घेतला. अशोकाच्या मृत्यूनंतर साठ वर्षांनी मौर्य साम्राज्याचा अस्त झाला. इ.स.पू. १८५ मध्ये शुंग साम्राज्याने मौर्यांना पराभूत करून मौर्य साम्राज्य संपुष्टात आणले. चंद्रगुप्ताने आपल्या कारकीर्दीत सिंधू नदीपलीकडील अलेक्झांडरच्या साम्राज्याचा प्रदेश जिंकून घेतला. चंद्रगुप्ताने सेल्युकस निकेटर याला पराभूत करून इराणचेही काही भाग जिंकून घेतले. कलिंग युद्धानंतर सम्राट अशोकाच्या कारकीर्दीत कलिंग युद्धानंतर साम्राज्याने ५० वर्षे शांतता व सुरक्षितता अनुभवली. अशोकाने बौद्ध धर्माचा स्वीकार करून या धर्माचा श्रीलंका, आग्नेय व पश्चिम आशिया तसेच

Regular

मौर्य साम्राज्य हे प्राचीन भारताच्या इतिहासातील एक प्रमुख साम्राज्य होते. त्यावर इ.स.पू. ३२१ ते इ.स.पू. १८५ पर्यंत मौर्य वंशाने राज्य केले होते. गंगेच्या खोऱ्यामधील मगध राज्यापासून उगम झालेल्या या साम्राज्याची राजधानी पाटलीपुत्र (आजचे पाटणा) ही होती. हे साम्राज्य इ.स.पू. ३२२ मध्ये चंद्रगुप्त मौर्य याने स्थापन केले. त्याने नंद घराण्याला पराभूत करून आपले साम्राज्य प्रस्थापित केले. त्याने भारतातील सत्तांच्या विघटनाचा फायदा उठवून आपल्या साम्राज्याचा पश्चिमेकडे व मध्य भारतात विस्तार केला. इ.स.पू. ३२० पर्यंत या साम्राज्याने अलेक्झांडरच्या प्रांतशासकांना (क्षत्रप) हरवून पूर्णपणे वायव्य भारत ताब्यात घेतला होता. ५०,००,००० वर्गकिमी एवढा प्रचंड प्रदेश ताब्यात असलेले मौर्य साम्राज्य हे तत्कालीन सर्वात मोठ्या साम्राज्यांपैकी एक, व भारतीय उपखंडातील सर्वात मोठे साम्राज्य होते. आपल्या सर्वोच्च शिखरावर असताना हे साम्राज्य उत्तरेला हिमालय, पूर्वेला आसाम, पश्चिमेला पाकिस्तान, अफगाणिस्तान व इराणचे काही भाग इतके पसरले होते. भारताच्या मध्य व दक्षिण प्रदेशांमध्ये चंद्रगुप्त व बिंदुसार यांनी कलिंग (सध्याचा ओरिसा) हा प्रदेश वगळता विस्तार केला. कलिंग नंतर सम्राट अशोकाने जिंकून घेतला. अशोकाच्या मृत्यूनंतर साठ वर्षांनी मौर्य साम्राज्याचा अस्त झाला. इ.स.पू. १८५ मध्ये शुंग साम्राज्याने मौर्यांना पराभूत करून मौर्य साम्राज्य संपुष्टात आणले. चंद्रगुप्ताने आपल्या कारकीर्दीत सिंधू नदीपलीकडील अलेक्झांडरच्या साम्राज्याचा प्रदेश जिंकून घेतला. चंद्रगुप्ताने सेल्युकस निकेटर याला पराभूत करून इराणचेही काही भाग जिंकून घेतले. कलिंग युद्धानंतर सम्राट अशोकाच्या कारकीर्दीत कलिंग युद्धानंतर साम्राज्याने ५० वर्षे शांतता व सुरक्षितता अनुभवली. अशोकाने बौद्ध धर्माचा स्वीकार करून या धर्माचा श्रीलंका, आग्नेय व पश्चिम आशिया तसेच

Bold

मौर्य साम्राज्य हे प्राचीन भारताच्या इतिहासातील एक प्रमुख साम्राज्य होते. त्यावर इ.स.पू. ३२१ ते इ.स.पू. १८५ पर्यंत मौर्य वंशाने राज्य केले होते. गंगेच्या खोऱ्यामधील मगध राज्यापासून उगम झालेल्या या साम्राज्याची राजधानी पाटलीपुत्र (आजचे पाटणा) ही होती. हे साम्राज्य इ.स.पू. ३२२ मध्ये चंद्रगुप्त मौर्य याने स्थापन केले. त्याने नंद घराण्याला पराभूत करून आपले साम्राज्य प्रस्थापित केले. त्याने भारतातील सत्तांच्या विघटनाचा फायदा उठवून आपल्या साम्राज्याचा पश्चिमेकडे व मध्य भारतात विस्तार केला. इ.स.पू. ३२० पर्यंत या साम्राज्याने अलेक्झांडरच्या प्रांतशासकांना (क्षत्रप) हरवून पूर्णपणे वायव्य भारत ताब्यात घेतला होता. ५०,००,००० वर्गकिमी एवढा प्रचंड प्रदेश ताब्यात असलेले मौर्य साम्राज्य हे तत्कालीन सर्वात मोठ्या साम्राज्यांपैकी एक, व भारतीय उपखंडातील सर्वात मोठे साम्राज्य होते. आपल्या सर्वोच्च शिखरावर असताना हे साम्राज्य उत्तरेला हिमालय, पूर्वेला आसाम, पश्चिमेला पाकिस्तान, अफगाणिस्तान व इराणचे काही भाग इतके पसरले होते. भारताच्या मध्य व दक्षिण प्रदेशांमध्ये चंद्रगुप्त व बिंदुसार यांनी कलिंग (सध्याचा ओरिसा) हा प्रदेश वगळता विस्तार केला. कलिंग नंतर सम्राट अशोकाने जिंकून घेतला. अशोकाच्या मृत्यूनंतर साठ वर्षांनी मौर्य साम्राज्याचा अस्त झाला. इ.स.पू. १८५ मध्ये शुंग साम्राज्याने मौर्यांना पराभूत करून मौर्य साम्राज्य संपुष्टात आणले. चंद्रगुप्ताने आपल्या कारकीर्दीत सिंधू नदीपलीकडील अलेक्झांडरच्या साम्राज्याचा प्रदेश जिंकून घेतला. चंद्रगुप्ताने सेल्युकस निकेटर याला पराभूत करून इराणचेही काही भाग जिंकून घेतले. कलिंग युद्धानंतर सम्राट अशोकाच्या कारकीर्दीत कलिंग युद्धानंतर साम्राज्याने ५० वर्षे शांतता व सुरक्षितता अनुभवली. अशोकाने बौद्ध धर्माचा स्वीकार करून या धर्माचा श्रीलंका, आग्नेय व पश्चिम आशिया तसेच

Light

अमरनाथ हिन्दूहरूको एउटा प्रमुख तीर्थस्थलको रूपमा रहेको छ । यो भारतको जम्मू र कश्मीर राज्यको श्रीनगर सहरको उत्तर-पूर्वमा १३५ किलोमिटरको दुरीमा रहेको छ । यो गुफा समुन्द्र सतहदेखि १३,६०० फिटको उचाइमा अवस्थित छ । यस गुफाको लम्बाइ (भिन्न देखि गहिराइ) १९ मिटर र चौडाइ १६ मिटर छ । गुफा ११ मिटर अग्लो छ । अमरनाथ गुफा भगवान शिवको प्रमुख धार्मिक स्थलहरू मध्ये एक हो । अमरनाथलाई तीर्थहरूको पनि तीर्थ भन्ने गरिन्छ किनकी यसै स्थानमा भगवान शिवले माता पार्वतीलाई अमरत्वको रहस्य बताएका थिए । यहाँको प्रमुख विशेषता पवित्र गुफामा हिउँबाट प्राकृतिक रूपमा शिवलिंगको निर्माण हुनु हो । प्राकृतिक हिउँबाट निर्मित हुने कारणले यसलाई स्वयम्भु हिमानी शिवलिङ्ग पनि भन्ने गरिन्छ । आषाढ शुक्ल पूर्णिमाबाट शुरू भएर जनैपूर्णिमासम्म पुरै साउन महिनाभर पवित्र हिमलिंग दर्शनको लागि यहाँ लाखौं श्रद्धालु आउने गर्दछन् । यस पवित्र गुफाको परिधि लगभग १५० फिट छ र यस गुफामा माथिबाट हिउँको पानीको स-सानो थोपा कुनै-कुनै स्थानमा झर्ने गर्दछ । यसै गुफामा एउटा यस्तो स्थान पनि छ, जहाँ हिउँको पानी झर्दा झर्दै त्यहाँ लगभग दश फिटको अग्लो शिवलिङ्ग बन्दछ । चन्द्रमाको आकार घटबढ अनुसार यस शिवलिङ्गको आकार पनि घट्ने-बढ्ने हुन्छ । श्रावण पूर्णिमामा यहाँ यो पवित्र शिवलिङ्ग आफ्नो पूर्ण आकारमा हुन्छ र औंसीसम्म यो छोटो हुँदै जान्छ । आश्चर्यको कुरा के छ भने यो शिवलिङ्ग ठोस हिउँबाट बनेको हुन्छ, जबकि गुफामा सामान्यतः काँचो हिउँ हुन्छ जुन हातमा राख्ने बित्तिकै हराउँछ । मूल अमरनाथ शिवलिङ्गदेखि केही फिटको दुरीमा गणेश, भैरव र पार्वतीको यस्तै बेग्ला बेग्लै हिमखण्डहरू छन् । यहाँको जनआस्था अनुसार यसै गुफामा माता पार्वतीलाई भगवान शिवले अमरकथा सुनाएका थिए जसलाई सुनेर सद्योजात शुक-शिशु शुकदेव ऋषिको रूपमा अमर भएका थिए ।

Regular

अमरनाथ हिन्दूहरूको एउटा प्रमुख तीर्थस्थलको रूपमा रहेको छ । यो भारतको जम्मू र कश्मीर राज्यको श्रीनगर सहरको उत्तर-पूर्वमा १३५ किलोमिटरको दुरीमा रहेको छ । यो गुफा समुन्द्र सतहदेखि १३,६०० फिटको उचाइमा अवस्थित छ । यस गुफाको लम्बाइ (भिन्न देखि गहिराइ) १९ मिटर र चौडाइ १६ मिटर छ । गुफा ११ मिटर अग्लो छ । अमरनाथ गुफा भगवान शिवको प्रमुख धार्मिक स्थलहरू मध्ये एक हो । अमरनाथलाई तीर्थहरूको पनि तीर्थ भन्ने गरिन्छ किनकी यसै स्थानमा भगवान शिवले माता पार्वतीलाई अमरत्वको रहस्य बताएका थिए । यहाँको प्रमुख विशेषता पवित्र गुफामा हिउँबाट प्राकृतिक रूपमा शिवलिंगको निर्माण हुनु हो । प्राकृतिक हिउँबाट निर्मित हुने कारणले यसलाई स्वयम्भु हिमानी शिवलिङ्ग पनि भन्ने गरिन्छ । आषाढ शुक्ल पूर्णिमाबाट शुरू भएर जनैपूर्णिमासम्म पुरै साउन महिनाभर पवित्र हिमलिंग दर्शनको लागि यहाँ लाखौं श्रद्धालु आउने गर्दछन् । यस पवित्र गुफाको परिधि लगभग १५० फिट छ र यस गुफामा माथिबाट हिउँको पानीको स-सानो थोपा कुनै-कुनै स्थानमा झर्ने गर्दछ । यसै गुफामा एउटा यस्तो स्थान पनि छ, जहाँ हिउँको पानी झर्दा झर्दै त्यहाँ लगभग दश फिटको अग्लो शिवलिङ्ग बन्दछ । चन्द्रमाको आकार घटबढ अनुसार यस शिवलिङ्गको आकार पनि घट्ने-बढ्ने हुन्छ । श्रावण पूर्णिमामा यहाँ यो पवित्र शिवलिङ्ग आफ्नो पूर्ण आकारमा हुन्छ र औंसीसम्म यो छोटो हुँदै जान्छ । आश्चर्यको कुरा के छ भने यो शिवलिङ्ग ठोस हिउँबाट बनेको हुन्छ, जबकि गुफामा सामान्यतः काँचो हिउँ हुन्छ जुन हातमा राख्ने बित्तिकै हराउँछ । मूल अमरनाथ शिवलिङ्गदेखि केही फिटको दुरीमा गणेश, भैरव र पार्वतीको यस्तै बेग्ला बेग्लै हिमखण्डहरू छन् । यहाँको जनआस्था अनुसार यसै गुफामा माता पार्वतीलाई भगवान शिवले अमरकथा सुनाएका थिए जसलाई सुनेर सद्योजात शुक-शिशु शुकदेव ऋषिको रूपमा अमर भएका थिए ।

Bold

अमरनाथ हिन्दूहरूको एउटा प्रमुख तीर्थस्थलको रूपमा रहेको छ । यो भारतको जम्मू र कश्मीर राज्यको श्रीनगर सहरको उत्तर-पूर्वमा १३५ किलोमिटरको दुरीमा रहेको छ । यो गुफा समुन्द्र सतहदेखि १३,६०० फिटको उचाइमा अवस्थित छ । यस गुफाको लम्बाइ (भिन्न देखि गहिराइ) १९ मिटर र चौडाइ १६ मिटर छ । गुफा ११ मिटर अग्लो छ । अमरनाथ गुफा भगवान शिवको प्रमुख धार्मिक स्थलहरू मध्ये एक हो । अमरनाथलाई तीर्थहरूको पनि तीर्थ भन्ने गरिन्छ किनकी यसै स्थानमा भगवान शिवले माता पार्वतीलाई अमरत्वको रहस्य बताएका थिए । यहाँको प्रमुख विशेषता पवित्र गुफामा हिउँबाट प्राकृतिक रूपमा शिवलिंगको निर्माण हुनु हो । प्राकृतिक हिउँबाट निर्मित हुने कारणले यसलाई स्वयम्भु हिमानी शिवलिङ्ग पनि भन्ने गरिन्छ । आषाढ शुक्ल पूर्णिमाबाट शुरू भएर जनैपूर्णिमासम्म पुरै साउन महिनाभर पवित्र हिमलिंग दर्शनको लागि यहाँ लाखौं श्रद्धालु आउने गर्दछन् । यस पवित्र गुफाको परिधि लगभग १५० फिट छ र यस गुफामा माथिबाट हिउँको पानीको स-सानो थोपा कुनै-कुनै स्थानमा झर्ने गर्दछ । यसै गुफामा एउटा यस्तो स्थान पनि छ, जहाँ हिउँको पानी झर्दा झर्दै त्यहाँ लगभग दश फिटको अग्लो शिवलिङ्ग बन्दछ । चन्द्रमाको आकार घटबढ अनुसार यस शिवलिङ्गको आकार पनि घट्ने-बढ्ने हुन्छ । श्रावण पूर्णिमामा यहाँ यो पवित्र शिवलिङ्ग आफ्नो पूर्ण आकारमा हुन्छ र औंसीसम्म यो छोटो हुँदै जान्छ । आश्चर्यको कुरा के छ भने यो शिवलिङ्ग ठोस हिउँबाट बनेको हुन्छ, जबकि गुफामा सामान्यतः काँचो हिउँ हुन्छ जुन हातमा राख्ने बित्तिकै हराउँछ । मूल अमरनाथ शिवलिङ्गदेखि केही फिटको दुरीमा गणेश, भैरव र पार्वतीको यस्तै बेग्ला बेग्लै हिमखण्डहरू छन् । यहाँको जनआस्था अनुसार यसै गुफामा माता पार्वतीलाई भगवान शिवले अमरकथा सुनाएका थिए जसलाई सुनेर

Light

विश्वनाथः (Vishwanatha) संस्कृतस्य एकः महान् अलङ्कारिकः आसीत् । एतस्य पितुः नाम चन्द्रशेखरः । एतस्य पितामहः प्रपितामहादयः सर्वेऽपि आलङ्कारिकाः आसन् । एतेन मम्मटरुय्यकानन्तरं अलङ्कार शास्त्रेतिहासे विश्वनाथस्य स्थानमस्ति । संस्कृतप्राकृतभाषातिरिक्तमनेकेषां भाषाणां विदुषा विश्वनाथेन कविजागत्यपि ख्यातिरर्जिता । आलंकारिकापेक्षया विश्वनाथः श्रेष्ठः कविर्यपासीत् । उत्कल वशोत्पत्रः कवेशचन्द्रशेखरस्यात्मज आसीत् कविराजः । यथा स्वयमेव संकेतितम् - श्रीचन्द्रशेखरमहाकविन्द्रसूनुः श्रीनारायणोऽस्य प्रपितामह आसीत् यथा - तत् प्राणत्वं च वृद्धिपितामह श्रीनारायणपादैरुक्तम् परं काव्यप्रकाशस्य भूमिकायां वामनाचार्येण काव्यप्रकाशदर्पणटीकायां श्रीनारायणः कविराजस्य पितामहः संकेतितः । यथा - “यदाहु श्री कलिङ्गभूमण्डलाखण्डल महाराजाधिराज श्री नरसिंहदेव सभायां धर्मदत्तं स्थगयन्तः सकत्नहृदय गोष्ठी -गरिष्ठ कविपण्डितास्मदिपितामह श्री नारायणदासपादाः । अनेन प्रतीयते यत् विश्वनाथस्य पितामहः नारायणदासः महाराजनरसिंहदेवस्य सभायां बहुसम्मानितः आसीत् । विश्वनाथेन स्वं स्वजनकं च सन्धिविग्रहकौ संकेतितम् । अतः पितापुत्रौ कलिङ्गदेशस्य राजमन्त्रिणौ स्याताम् । काव्यप्रकाशस्य दीपिकाटीकाकारः चण्डीदत्तोऽस्य पितामहस्यानुजः आसीत् । कविराज उत्कलनिवासी प्रतीयते । यतोहि अनेन काव्यप्रकाशशृपणे ‘चिंकु’ शब्दस्य पर्याय उत्कलदेश जो निश्चीयते कविराजः । ग्रन्थकृता कुत्रापि रचनाकालसम्बन्धे न संकेतितम् । परमुद्धतवाकान्यधिकृत्य अस्यपूर्वसीमा निश्चीयते । विश्वनाथेन रुय्यककृतालङ्कारसर्वस्वग्रन्थात् अनेकान्युदाहरणानि अक्षरशः समुद्धतानि साहित्यपर्णे ।

Regular

विश्वनाथः (Vishwanatha) संस्कृतस्य एकः महान् अलङ्कारिकः आसीत् । एतस्य पितुः नाम चन्द्रशेखरः । एतस्य पितामहः प्रपितामहादयः सर्वेऽपि आलङ्कारिकाः आसन् । एतेन मम्मटरुय्यकानन्तरं अलङ्कार शास्त्रेतिहासे विश्वनाथस्य स्थानमस्ति । संस्कृतप्राकृतभाषातिरिक्तमनेकेषां भाषाणां विदुषा विश्वनाथेन कविजागत्यपि ख्यातिरर्जिता । आलंकारिकापेक्षया विश्वनाथः श्रेष्ठः कविर्यपासीत् । उत्कल वशोत्पत्रः कवेशचन्द्रशेखरस्यात्मज आसीत् कविराजः । यथा स्वयमेव संकेतितम् - श्रीचन्द्रशेखरमहाकविन्द्रसूनुः श्रीनारायणोऽस्य प्रपितामह आसीत् यथा - तत् प्राणत्वं च वृद्धिपितामह श्रीनारायणपादैरुक्तम् परं काव्यप्रकाशस्य भूमिकायां वामनाचार्येण काव्यप्रकाशदर्पणटीकायां श्रीनारायणः कविराजस्य पितामहः संकेतितः । यथा - “यदाहु श्री कलिङ्गभूमण्डलाखण्डल महाराजाधिराज श्री नरसिंहदेव सभायां धर्मदत्तं स्थगयन्तः सकत्नहृदय गोष्ठी -गरिष्ठ कविपण्डितास्मदिपितामह श्री नारायणदासपादाः । अनेन प्रतीयते यत् विश्वनाथस्य पितामहः नारायणदासः महाराजनरसिंहदेवस्य सभायां बहुसम्मानितः आसीत् । विश्वनाथेन स्वं स्वजनकं च सन्धिविग्रहकौ संकेतितम् । अतः पितापुत्रौ कलिङ्गदेशस्य राजमन्त्रिणौ स्याताम् । काव्यप्रकाशस्य दीपिकाटीकाकारः चण्डीदत्तोऽस्य पितामहस्यानुजः आसीत् । कविराज उत्कलनिवासी प्रतीयते । यतोहि अनेन काव्यप्रकाशशृपणे ‘चिंकु’ शब्दस्य पर्याय उत्कलदेश जो निश्चीयते कविराजः । ग्रन्थकृता कुत्रापि रचनाकालसम्बन्धे न संकेतितम् । परमुद्धतवाकान्यधिकृत्य अस्यपूर्वसीमा निश्चीयते । विश्वनाथेन रुय्यककृतालङ्कारसर्वस्वग्रन्थात् अनेकान्युदाहरणानि अक्षरशः समुद्धतानि साहित्यपर्णे ।

Light

विश्वनाथः (Vishwanatha) संस्कृतस्य एकः महान् अलङ्कारिकः आसीत् । एतस्य पितुः नाम चन्द्रशेखरः । एतस्य पितामहः प्रपितामहादयः सर्वेऽपि आलङ्कारिकाः आसन् । एतेन मम्मटरुय्यकानन्तरं अलङ्कार शास्त्रेतिहासे विश्वनाथस्य स्थानमस्ति । संस्कृतप्राकृतभाषातिरिक्तमनेकेषां भाषाणां विदुषा विश्वनाथेन कविजागत्यपि ख्यातिरर्जिता । आलंकारिकापेक्षया विश्वनाथः श्रेष्ठः कविर्यपासीत् । उत्कल वशोत्पत्रः कवेशचन्द्रशेखरस्यात्मज आसीत् कविराजः । यथा स्वयमेव संकेतितम् - श्रीचन्द्रशेखरमहाकविन्द्रसूनुः श्रीनारायणोऽस्य प्रपितामह आसीत् यथा - तत् प्राणत्वं च वृद्धिपितामह श्रीनारायणपादैरुक्तम् परं काव्यप्रकाशस्य भूमिकायां वामनाचार्येण काव्यप्रकाशदर्पणटीकायां श्रीनारायणः कविराजस्य पितामहः संकेतितः । यथा - “यदाहु श्री कलिङ्गभूमण्डलाखण्डल महाराजाधिराज श्री नरसिंहदेव सभायां धर्मदत्तं स्थगयन्तः सकत्नहृदय गोष्ठी -गरिष्ठ कविपण्डितास्मदिपितामह श्री नारायणदासपादाः । अनेन प्रतीयते यत् विश्वनाथस्य पितामहः नारायणदासः महाराजनरसिंहदेवस्य सभायां बहुसम्मानितः आसीत् । विश्वनाथेन स्वं स्वजनकं च सन्धिविग्रहकौ संकेतितम् । अतः पितापुत्रौ कलिङ्गदेशस्य राजमन्त्रिणौ स्याताम् । काव्यप्रकाशस्य दीपिकाटीकाकारः चण्डीदत्तोऽस्य पितामहस्यानुजः आसीत् । कविराज उत्कलनिवासी प्रतीयते । यतोहि अनेन काव्यप्रकाशशृपणे ‘चिंकु’ शब्दस्य पर्याय उत्कलदेश जो निश्चीयते कविराजः । ग्रन्थकृता कुत्रापि रचनाकालसम्बन्धे न संकेतितम् । परमुद्धतवाकान्यधिकृत्य अस्यपूर्वसीमा निश्चीयते । विश्वनाथेन रुय्यककृतालङ्कार सर्वस्वग्रन्थात् अनेकान्युदाहरणानि अक्षरशः समुद्धतानि साहित्यपर्णे ।